

दीपक



“तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग
के लिये उजियाला है।”



भजन संहिता 119:105

दीपक

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये
उजियाला है। भजन संहिता 119:105

जूते की कंकड़ (A Pebble In Your Shoe)

एक जगह एक बात लिखी थी कि, “मेरे सामने का पहाड़ मुझे नहीं रोक रहा है, लेकिन मेरे जूते में एक कंकड़ है जो मुझे चढते समय चोट पहुंचा रही है” यह बात सच है कि कभी-कभी बहुत बड़ी ऊर्चाईयों को हम पार कर सकते हैं लेकिन तो भी हमारे जूते में कंकड़ जैसी किसी छोटी सी चीज से हार जाते हैं।

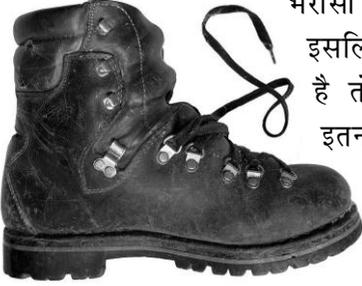
प्रभु के लिये हम जिस ऊँचाई को पाना चाहते हैं उसको पाने से कौन सी चीज हमको रोक रही है? पौलुस ने समझया कि, “न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊर्चाई, न गहिराई, और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।”

तो यदि पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को पार किया, तो क्या हम एक कंकड़ को अपने और प्रभु के बीच में आने दे रहे हैं। परमेश्वर के राज्य की ओर चलते हुए हमारे जूते में कंकड़ क्या प्रदर्शित करती है? क्या उदासीनता और उपेक्षा हमारे लिए जूते की वह कंकड़ है? या फिर वह कंकड़ आलस्य और निरसता है?

हाल ही में हमने पढ़ा कि अमेरिका और कनाडा में आधे से ज्यादा लोग नीरसता के शिकार हैं। और कहा गया कि 65 वर्ष से अधिक आयु के 75 प्रतिशत लोग नीरस हैं। आज नवयुवकों के लिए भी यह बात सच लगती है, क्योंकि वे प्रायः नीरस दिखते हैं और वे जीवन को नीरसता से जीते हैं।

यीशु मसीह से प्यार करने वाला कोई व्यक्ति कैसे नीरस हो सकता है? हम यीशु मसीह के पुनः इस पृथ्वी पर आने से ठीक पहले के उत्तेजक समय में जी रहे हैं, जब वह आकर सभी गलत चीजों को ठीक करेगा। हमारा जीवन आनन्द, उत्तेजना और प्रत्याशा से भरा होना चाहिए। नीरस होने वाले लोगों में समपर्ण की कमी होती

है। यहां तक कि जो लोग सांसारिक लक्ष्य प्राप्त करने के प्रति समर्पित होते हैं वे उन लोगों से कम नीरस होते हैं जिनके पास कोई भी समर्पण नहीं होता है। भजनकार बताता है कि, “अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा” (भजन संहिता 37:5)



इसलिए यदि हम परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण रूप से समर्पित हैं तो वह हमारे जूते की कंकड़ (जीवन के कष्ट) को इतना छोटा करेगा कि जब हम पहाड़ की चढ़ाई (परमेश्वर की राज्य की ओर चलना) चढ़ेंगे तो हमारे पैर को कम चोट (परमेश्वर के राज्य की ओर जाने वाले मार्ग में आने वाली बाधा) लगेगी।

इसका अर्थ यह है कि यदि हम अपने आप को सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर के प्रति समर्पित कर देते हैं तो वह उसके राज्य की ओर चलने में आने वाली बाधाओं को कम कर देता है।

नीरस, उदासीन और आलसी मनुष्य कुछ नहीं करते बल्कि वे केवल उस कंकड़ के विषय में सोचते रहते हैं। जीवन कंकड़ों से भरा हुआ है लेकिन हमें पहाड़ को चढ़ना है। “आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इसमें मगन और आनन्दित हों” (भजन संहिता 118:24) तो अब हमें क्या करना चाहिए? क्या हम जूते में कंकड़ होने के कारण चारों ओर उदासी दिखाएँ? अपने दुख और दर्द के विषय में सोचें, नीरस महसूस करें या फिर वापस बिस्तर में जाकर सो जायें? सुलैमान एक आलसी मनुष्य के विषय में बताता है, वह कहता है कि, “कुछ और सो लेना, थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेते रहना” (नीतिवचन 6:10)

एक आलसी और नीरस मनुष्य अपने बिस्तर में लैटा रहता है या फिर वह केवल अपने कंकड़ के विषय में और दूसरे दुख और दर्द के विषय में शिकायत करने के लिए उठता है, जबकि परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण रूप से समर्पित एक मनुष्य आनन्द के साथ उछलता है। इसलिए यदि कोई उछलते हुए हवा में रहता है तो जूते का कंकड़ उसको कोई नुकसान नहीं पहुंचाता है और यीशु ने हमें “आनन्द में उछलने” के लिए कहा। क्या यीशु के ये शब्द अर्थपूर्ण थे या हमारे उद्धारकर्ता ने केवल बोलने के लिए ये शब्द कहे? उसने हमसे कहा कि, “आनन्दित होकर उछलना।”

हमारा जीवन क्या ही रोमांचक होना चाहिए! हमारा परमेश्वर एक कितना महान

परमेश्वर है! हमारी आशा क्या ही आश्चर्यजनक आशा है! सच है कि, “आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इसमें मगन और आनन्दत हों” “हम मसीह में सब कुछ कर सकते हैं जो हमें सामर्थ्य देता है” (फिल्लिपियों 4:13) हमने अपने मार्गों को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया है इसलिए वही हमारा मार्गदर्शन करेगा। परमेश्वर के प्रेम से कोई भी चीज हमें अलग नहीं करेगी। क्या एक कंकड़ हमारी गति को धीमी करेगी? कभी नहीं! क्या हम परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं? क्या हम भी ऐसा ही समझते हैं जैसा पौलुस समझता था जब वह कहता है कि, “न ऊर्चाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह में है अलग कर सकेगी।” (रोमियों 8:39)

‘जूते की कंकड़’ (A Pebble In Your Shoe) is taken from ‘Minute Meditations’ by Robert J. Lloyd

अभिषिक्त के रूप में यीशु (Jesus as Messiah)

“अभिषिक्त” (Messiah) और “मसीह” (Christ) इब्रानी और यूनानी भाषा के शब्द हैं जिनका अर्थ है “अभिषिक्त”। ये दोनों शीर्षक यीशु के लिए हैं क्योंकि यीशु परमेश्वर की उस योजना का केन्द्र बिन्दु थे जो योजना परमेश्वर ने मानवजाति के उद्धार के लिये बनायी थी। तो भी यीशु के समय के यहूदी लोगों ने, जब यीशु आया तो, उसको नहीं पहचाना और वे अपने लिये अभिषिक्त की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम यहां इसी विषय में अध्ययन करेंगे कि ऐसा क्यों हुआ।

मुख्य पद: लूका 24:13-32

जब यीशु को गैरकानूनी रूप से बन्दी बनाया गया और उनको मारने के लिए उन पर बड़े ही अपमानित तरीके से दोष लगाये गये तो उनके चेलों पूरी तरह से उजड़ गये और उनकी दुनिया में खलबली मच गयी। हालांकी बहुत बार यीशु ने अपने चेलों को इस सच्चाई के विषय में बताया था कि वह मारे जायेंगे लेकिन तौभी इस सच्चाई को उन्होंने स्वीकार नहीं किया कि उनके गुरु के साथ उनका सम्बन्ध इस भयानक तरीके से समाप्त होगा। कुछ दिनों के बाद उसके दो चले इम्मारुस गांव को जाते हुए रास्ते में ये बात कर रहे थे कि, “परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्त्राएल को छुटकारा देगा” (पद 21) पुर्नरूत्थान के बाद भी यीशु ने इस बात को समझाने के लिए चेलों को बताया।

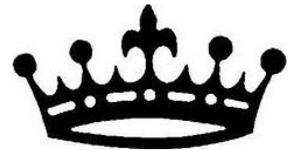
1. क्या इन दोनों चेलों को विश्वास था कि जिस यीशु को वे जानते थे और जो उनके अनुसार मर चुका था, वही “अभिषिक्त” अर्थात “मसीह” था? क्या उनकी सोच बदल गयी थी?
2. यीशु से बातें करने से पहले ये चेलें मसीह की भूमिका को समझने में क्यों असफल रहें, जबकि इम्मारुस को जाते हुए मार्ग में यीशु ने बहुत ही स्पष्ट रूप से व्याख्या की?
3. “मूसा और सब भविष्यद्वक्ताओं” (पद 27) के विषय में वे पद क्या है, जिनका प्रयोग यीशु ने यह बताने के लिए किया कि किस प्रकार मसीह को दुख उठाना होगा? क्या उनको यह पहले से पता था?

क्यों यीशु के चेलें और उस समय का प्रत्येक यहूदी इस बात से अन्जान था कि अभिषिक्त अर्थात मसीह को क्या कार्य करना था? इस प्रश्न का उत्तर मसीह के कार्य के दो विभिन्न पहलूओं में निहित है: ये दोनों ही पहलू परमेश्वर की योजना के लिए आवश्यक थे; इनमें से केवल एक को ही यहूदियों ने पहचाना।

अभिषिक्त की लोकप्रिय धारणा: मुक्तिदाता राजा

इस अभिषिक्त के लिए बाइबल के पुराने नियम में सीधे तौर कुछ ही पद हैं, लेकिन बहुत से पद हैं जो इस आने वाले अगुवे के विषय में बताते हैं। दानिय्येल भविष्यद्वक्ता ने “अभिषिक्त प्रधान” के विषय में बताया (दानिय्येल 9:25) बहुत से भजनों में राजा दाऊद ने भी प्रभु के द्वारा अभिषिक्त के विषय में बताया, जैसे भजन 2:2 । तेल से अभिषेक करना एक राजा के सिंहासन पर बैठने को प्रदर्शित करता था, या जब एक याजक या भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के कार्य के लिए नियुक्त किया जाता था तो उसका अभिषेक तेल से किया जाता था।

ऐसे भी बहुत से पद हैं जो एक ऐसे राजा के विषय में बताते हैं जो एक बड़े राज्य पर बुद्धिमानी और न्याय से राज्य करेगा। यीशु के समय के यहूदियों के लिए, अभिषिक्त को एक ऐसे विजयी राजा के रूप में आना था जो रोमियों को हराकर इस्राएल के प्राचीन महिमामय राज्य को फिर से पुर्नगठित करता। वह राजा दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा और सुख समृद्धि और धार्मिकता का समय लेकर आयेगा। इस धारणा ने आम आदमी को एक बड़ी आशा प्रदान की।



राजा के रूप में अभिषिक्त की यह छवी बिल्कुल सही है - परमेश्वर का राज्य स्थापित होगा जिसमें यीशु राजा होंगे और वह पूरे विश्व पर शान्ति के

साथ येरूशलेम से राज्य करेंगे। लोगों में भ्रम इसलिए पैदा हुआ क्योंकि कोई भी यह नहीं समझ पाया कि राजा को मुकुट से पहले क्रूस मिलना था।

अभिषिक्त की भूलायी गयी धारणा: दुखी सेवक

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने अभिषिक्त के कामों का विस्तृत चित्रण किया। उनका चित्रण एक वध होने वाली भेड़ और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए स्वयं दुख उठा रहा था। (यशायाह 53:3-5)

यीशु के समय के यहूदियों और धार्मिक अगुओं के लिये यह धारणा विदेशी थी। यीशु के सबसे चर्चित शिष्य, पतरस, ने इस बात को जोरदार तरीके से नकारा। (मत्ती 16:21-23) जब यीशु ने लोगों से रोमी अत्याचारियों को हराने के बजाय अपने दुख उठाने और स्वयं का इंकार करने की बातें कही तो उसके पीछे चलने वाले बहुत से लोगों ने यीशु में कोई रूचि नहीं रखी।

कुछ सम्बन्धित पद

पुराने नियम में अभिषिक्त के विषय में

भजन संहिता 2:2; 45:7; 89:20; यशायाह 61:1-3; दानिय्येल 9:24-26

अभिषिक्त का कष्ट सहना

भजन संहिता 22:1-21; यशायाह 53; दानिय्येल 9:26; जकर्याह 12:10

आने वाला राजा

2 शैमूएल 7:12-16; भजन संहिता 72; यिमर्याह 23:5-6; 30:8-9; यहैजकेल 37:24-25; मीका 5:2-4; जकर्याह 9:9-10; मत्ती 2:2

नये नियम में मसीह

मत्ती 2:4; 22:41-45; मरकुस 15:32; लूका 2:11; यूहन्ना 1:41; 4:25-26; 7:26-31; प्रेरितों के काम 2:29-36; 9:20-22; 26:22-23

परमेश्वर का मेमना

यूहन्ना 1:29,36; प्रेरितों के काम 8:32-35; 1 पतरस 1:18-21; प्रकाशितवाक्य 5:5-12

दोनों धारणाओं में समन्वय: परमेश्वर की श्रेष्ठ योजना

अभिषिक्त को पुराने नियम की बहुत सी बातों को पूरा करना था। परमेश्वर की योजना के

अनुसार एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता थी जो अपनी इच्छा से मानवजाति के पापों के लिए एक सिद्ध बलिदान हो सके और वह यीशु मसीह थे। और मसीह पर विश्वास करने के द्वारा, परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग और क्षमा मिलती हैं। जो लोग यह विश्वास करते हैं कि यीशु हमारे पापों की क्षमा के लिए मारे गये, वे धर्मी गिने जाते हैं और उन्हें अनन्त जीवन दिया जायेगा।

“और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।” (इब्रानियों 9:15)

मूसा की व्यवस्था में जो बलिदान और अराधना के प्रयोजन थे वे दृष्टान्त या नमूना थे जो मसीह के कार्यों की ओर संकेत करते थे। मसीह अब उन लोगों के लिए, जो उनकी उद्धार की कृपा को स्वीकार करते हैं, महायाजक के रूप में परमेश्वर और हमारे बीच में मध्यस्थ है और हमारी सहायता के लिए परमेश्वर के साथ है जिससे कि हम अपने आप को उनकी समानता में बदलते जाये। जब यीशु मसीह पृथ्वी पर आयेंगे तो वे जीवतों और मरें हुआँ का न्याय करेंगे। वे परमेश्वर के राज्य की स्थापना करेंगे और येरूशलेम से उन लोगों के साथ शासन करेंगे जिनको उन्होंने पाप और मृत्यु से बचाया है। इस प्रकार अभिषिक्त/मसीह/राज्य/भविष्यद्वक्ता/सेवक/मेमने के विषय में सभी भविष्यवाणियाँ पूरी होंगी।

“वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।” (इब्रानियों 9:28)

यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान होने तक उसके अनुयायी भी इन बातों को पूरी तरह से नहीं समझ पाये थे। लूका 24:13-35 में ऐसा प्रतित होता है कि इम्माऊस को जाते हुए क्लियुपास और उसका साथी पहले व्यक्ति थे जो यीशु की मसीह की भूमिका को समझे थे। उसके बाद प्रेरितों ने यहूदियों और फिर अन्यजातियों को प्रचार करते हुए यह सुनिश्चित किया कि सब लोग इस बात को समझे कि परमेश्वर का अपने पुत्र को लेकर क्या उद्देश्य है।

“और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया। और उन का अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुआँ में से जी उठाना, अवश्य था;

और यही यीशु जिस की मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।” (प्रेरितों के काम 17:5)

आज सम्पूर्ण बाईबल हमारे पास है तो हम पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पढ़ सकते हैं और नये नियम के सुसमाचार से यीशु, जो कि अभिषिक्त है, उनके जीवन और उनके कार्यों के विषय में पढ़ सकते हैं और यह भी देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रेरितों ने इन दोनों बातों को आपस में जोड़ते हुए टिप्पणीयां की है। हमें इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद देना चाहिये कि हमें ये बातें समझने के लिए बाईबल हमारे पास है। तो आईये हम इसका सम्पूर्ण लाभ उठाये और यीशु के द्वारा दिये गये उद्धार के मार्ग को समझे और स्वीकार करें।

सारांश

- “मसीह” और “ख्रीष्ट” इन दोनों का अर्थ “अभिषिक्त” है और ये प्रतिज्ञा किये हुए एक धर्मी राजा को दिये गये शीर्षक है। वह राजा मसीह है।
- एक राजा के रूप में अपनी भूमिका से पहले मसीह को दुख उठाना था और इस दुनिया के पापों के लिए मरना था और फिर मृतकों में से जी उठकर एक बिचवई के रूप में उन लोगों को अनुग्रह देना था जो उस पर विश्वास करते हैं। बहुत से लोगों ने अभिषिक्त (मसीह) की दुख उठाने और मरने की जरूरत को तब तक नहीं समझा जब तक यीशु मर कर नहीं जी उठे।

अन्य खोज

1. लूका के 24 अध्याय में यीशु ने यह बात बताने के लिये कि इससे पहले मसीह को महिमा मिले उसको दुख उठाना आवश्यक है, उन्होंने “मूसा और सब भविष्यद्वक्ताओं” के विषय में बताया। बाईबिल की कौन सी पहली पाँच पुस्तकों (मूसा की पुस्तकों) से उन्होंने ये बात बतायी? भविष्यद्वक्ताओं के कौन से पदों के विषय में उन्होंने बताया?
2. मसीह के दुख उठाने की भविष्यवाणियों के विषय में आज यहूदी क्या सोचते हैं? एक ऐसे यहूदी को जो मसीह/राजा के पहले आगमन की प्रतीक्षा में है, आप ये बात कैसे समझायेंगे कि वास्तव में वे यीशु के द्वितीय आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

‘अभिषिक्त के रूप में यीशु’ (Jesus as Messiah) is from ‘The Way of Life’, edited by R.J. Hyndman

‘यहोवा का दूत छावनी किये रहता है’ (भाग 1)

‘The Angel of the LORD encampeth’ (Part 1)

भजन संहिता 34 में उन लोगों के लिए बहुत ही सुन्दर पद है जो लोग परमेश्वर से डरते हैं और उस पर भरोसा रखते हैं। लेकिन उन लोगों के लिए, जो यहोवा से घृणा करते हैं और उसके मार्गों से घृणा करते हैं, कुछ पद बहुत ही भयानक भी हैं – जैसे पद 21 – “दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जायेगा; और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे।” (भजन 34:21)

और इसलिए, जैसा कि बाईबल भी बहुत सी जगहों पर बताती है कि, धर्मियों को बचाना और दुष्टों को मारना परमेश्वर का कार्य है। “इसलिए परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख” (रोमियों 11:22), उन पर जो उसके मार्गों को खोजते हैं – उन पर भलाई, और उन पर जो उसके मार्गों को छोड़ देते हैं – उसके न्याय की कड़ाई।

अब किस प्रकार परमेश्वर अपने लोगों को उद्धार देने के लिए कार्य करता है, और किस प्रकार उन लोगों का नाश करता है जो उसके मार्गों से घृणा करते हैं और दुष्ट हैं। परमेश्वर का कार्य करने का एक माध्यम जो हमें पता है वह स्वर्गदूत है। इब्रानियों का पहला अध्याय स्वर्गदूतों के कार्य करने के उद्देश्य को परिभाषित करता है।

“क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएँ नहीं, जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती है?” (इब्रानियों 1:14)

स्वर्गदूत परमेश्वर के सेवकों के रूप में दिये गये हैं जो उन लोगों के लिए कार्य कर रहे हैं जो परमेश्वर के उद्धार के वारिस हैं। अब प्रश्न यह है कि स्वर्गदूत किस प्रकार यह कार्य करते हैं? किस प्रकार स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों के लिए कार्य करते हैं? हमने इब्रानियों के पहले अध्याय में पढ़ा कि,

“और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है, “वह अपने दूतों को पवन, और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है।” (इब्रानियों 1:7)

इसका क्या अर्थ है? भजन संहिता के अध्याय 104 के पद 4 में भी ऐसा ही लिखा है। इन पदों में आये “पवन” शब्द के लिए मूल भाषा (इब्रानी) में “रूहाक” शब्द आया है जो श्वास या हवा से सम्बन्धित है यही शब्द उत्पत्ति के अध्याय 2 और पद 7 में और उत्पत्ति के अध्याय 7 और पद 22 में भी मनुष्य को और पशुओं को जीवन देने के लिए भी प्रयोग हुआ है। जब हम स्वर्गदूतों को पवन बनाने के विषय में पढ़ते हैं, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वे आत्मिक शरीर के साथ आत्मिक जाति हैं बल्कि वे

परमेश्वर के लोगों को जीवन देने के लिए कार्य करने वाली जाति है - वे परमेश्वर के लोगों को जीवन के मार्ग पर लाने के लिए कार्य करते हैं - वे उनके उद्धार के लिए कार्य करते हैं जिससे हम जीवन पा सकें। और इसलिये वे आत्मा या पवन बनाये गये हैं जो परमेश्वर से मिलने वाले जीवन को उसके लोगों को देते हैं। अब हम “धधकती आग” के विषय में देखेंगे, यह शब्द बाईबिल में “नष्ट” करने अर्थात् जीवन लेने के लिए लगातार प्रयोग हुआ है।

“और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दें; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।” (2 थिस्सलुनिकियो 1:7-8)

यह धधकती आग मूल भाषा (यूनानी) में वही शब्द है जो इब्रानियों के 1 अध्याय के 7वें पद में आया है। स्वर्गदूत परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए दोहरी भूमिका में कार्य करते हैं - पहले तो परमेश्वर के लोगों का जीवन के मार्ग पर मार्गदर्शन करने के लिए कार्य करते हैं - और दूसरे, परमेश्वर और उसके लोगों के विरोधीयों को नाश करने के लिए कार्य करते हैं। जीवन देने वाली पवन या आत्मा और जीवन लेने वाली धधकती आग के इन संकेतों को यूहन्ना बपतिस्मादाता ने भी प्रयोग किया।

“अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।... वह (यीशु) तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।” (मत्ती 3:10-12)

जो अच्छे गेहूँ हैं, जो उसकी महिमा के लिए इकट्ठा होंगे, वे परमेश्वर की पवित्र आत्मा के दिव्य स्वभाव के भागी होंगे और आत्मा से भरे जायेंगे। जो त्यागे गये होंगे वे आग में डूबाकर नष्ट किये जायेंगे ताकि परमेश्वर की महिमा सम्पूर्ण पृथ्वी पर भर जाये।

इसलिए हमें फिर से स्वर्गदूतों के दोहरे कार्य को याद दिलाया गया है; और यह दोहरा कार्य है कि वे परमेश्वर के लोगों को जीवन का मार्ग दिखाने में सहायता और मार्गदर्शन करने के लिए उनके चारों ओर छावनी किये रहते हैं - और परमेश्वर और उसके लोगों के विरोध में जो भी है उनके विरोध में कार्य करने के लिए है।

हम इस बात को फिर से प्रेरितों के काम के 12वें अध्याय में स्पष्टतया देख सकते हैं। परमेश्वर के स्वर्गदूत जीवन देने के लिए कार्य करते हैं;

“तो देखों, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया और कहा, ‘उठ, जल्दी कर’ और उसके हाथों से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।” (प्रेरितों के काम 12:4)



परमेश्वर के स्वर्गदूत जीवन लेने के लिए भी कार्य करते हैं;

“उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा न दी; और वह कीड़े पड़के मर गया।” (प्रेरितों के काम 12:23)

इन दोनों पदों से स्पष्ट है कि हेरोदेस की योजना थी कि पतरस मरना चाहिये। लेकिन स्वर्गदूत ने पतरस को मृत्यु से निकालकर जीवन दिया। और फिर हेरोदेस को जो उस समय परमेश्वर के लोगों का विरोधी था, उसको स्वर्गदूत जीवन से मृत्यु तक ले गया।

इसलिए हम जो परमेश्वर के लोग होने के लिए चुने गये हैं, हम भी चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवनों में इस प्रकार कार्य करें कि हम भी उद्धार के वारिस हो सकें - हम भी आत्मा में डूब सकें - हमारे प्रभु के आने पर दिव्य स्वभाव के भागी हो सकें। हम इस सत्य के सम्पूर्ण होने की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि जब, *“यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है।”*

यह पद कहता है कि यहोवा का दूत “उनको बचाता है”, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे लिए जो भी असुविधाजनक है वह उस सब से हमें बचाता है या जिन चीजों को हम सोचते हैं कि वे हमारे लिए कष्टदायक हैं उन सबसे हमें बचाता है। ये भी हो सकता है कि उन बातों को परमेश्वर इसलिये प्रयोग कर रहा हो ताकि वह हमें अपने राज्य की ओर बढ़ा सकें और यह सब वह हमें अनन्त मृत्यु से बचाने के लिए प्रयोग कर रहा हो।

इस अनन्त मृत्यु से हमारा बचाव आज हमारी मृत्यु भी हो सकता है ताकि हम सदा सर्वदा के लिए उसके आने वाले राज्य में जीवन पा सकें, जैसा कि हम प्रेरितों के 12 अध्याय में याकूब को देखते हैं। क्या जब हेरोदेस ने याकूब को तलवार से मरवा डाला तो उस समय यहोवा का स्वर्गदूत याकूब के चारों ओर छावनी किये हुए नहीं था? (प्रेरितों के काम 12:1) निश्चय ही स्वर्गदूत याकूब के साथ छावनी किये था लेकिन यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उस समय याकूब मारा जाये और पतरस नहीं। लेकिन याकूब का सम्पूर्ण नाश नहीं हुआ, प्रभु उसको कब्र के बन्धनों से छुड़ाकर अनन्त जीवन देगा।

यही विचार हम यीशु के अनुभव में भी देखते हैं।

“यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आँसू



बहा-बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और विनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी ग।”
(इब्रानियों 5:7)

मृत्यु से बचाने की यीशु की प्रार्थना सुनी गयी।

तो अब आप के मन में यह प्रश्न आयेगा कि यीशु तो मर गये थे फिर किस प्रकार उनकी मृत्यु से बचाने की प्रार्थना सुनी गयी? जी हाँ, लेकिन जिस मृत्यु से बचने के लिए वे प्रार्थना कर रहे थे वह अनन्त

मृत्यु से बचने के लिए थी। उन्होंने परमेश्वर से निवेदन किये कि वह उनको सब बातों में परमेश्वर का आज्ञाकारी रहने की सामर्थ्य दें और यहां तक कि वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रह सकें। यीशु पाप करते तो वे सदा के लिए मर जाते, लेकिन उन्होंने निवेदन किया, और उन्हें मृत्यु तक आज्ञाकारी रहने की सामर्थ्य प्राप्त हुयी ताकि वे जीवन पा सकें। यीशु की प्रार्थना सुनी गयी और उनको अपने पिता का इन्कार किये बिना क्रूस तक जाने की सामर्थ्य दी गयी - इसलिए वे मृत्यु के बाद जिलाये गये कि वह फिर कभी न मरें। उनको बचाया गया - उनकी प्रार्थना सुनी गयी।

उनको बचाने के लिए कैसे सामर्थ्य दी गयी?

“तब स्वर्ग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ्य देता था।” (लूका 22:43)

इसलिए हमसे असुविधाओं और कष्टों से बचाने का वायदा नहीं किया गया है, और यहाँ तक कि ‘क्रूस पर एक भयानक मृत्यु’ से बचाने के लिए भी नहीं - बल्कि अनन्त मृत्यु से बचाने के लिए - यदि हम ‘परमेश्वर से डरे और उसके दूत को अपने पास छावनी करने दें तो वह हमें अनन्त मृत्यु से बचायेगा।

उत्पत्ति के 19 वें अध्याय में एक कहानी है जहाँ हम देखते हैं कि कैसे प्रेम और देखभाल पिता परमेश्वर अपने लोगों के लिए रखता है, और हमारी सुरक्षा और देखभाल के लिए किस प्रकार वह स्वर्गदूतों को प्रयोग करता है। यह लूत की कहानी है; और हमें याद होगा कि लूत आरम्भ में स्वयं अपनी मूर्खता के कारण इस परिस्थिति में पड़ा। लूत ने सदोम की ओर सुन्दर भूमि देखी और उसने अपना तम्बू वही पर लगाया - वह उस शहर में गया और वहाँ एक पुरनिया बन गया। इसलिए वह स्वयं अपने आप को ऐसी परिस्थिति में लेकर आया और अपने परिवार को ऐसी भयानक जगह पर लेकर आया, क्योंकि वह अपने परिवार के लिए आराम चाहता था और लोग जीवन में आराम चाहते हैं। लेकिन वह एक धर्मी व्यक्ति था और परमेश्वर से डरता था। नया नियम हमें बताता है (2पतरस 2:8), कि परमेश्वर ने उसको, स्वर्गदूतों के द्वारा सम्भाला और

परेशानियों से बचाया।

“जब पह फटने लगी, तब दूतों ने लूत से फुर्ती कराई और कहा, कि उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा; नही तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जायेगा। पर वह विलम्ब करता रहा, इस से उन पुरुषों ने उसका और पत्नी, और दोनों बेटियों का हाथ पकड़ लिया; क्योंकि यहोवा की दया उस पर थी; और उसको निकालकर नगर के बाहर कर दिया।” (उत्पत्ति 19:15-16)

लूत देरी कर रहा था, इसलिए स्वर्गदूतों ने उससे जल्दी करने को कहा। लेकिन तो भी लूत हिचक रहा था, इसलिए उन्होंने उसे - ‘दया दिखाते हुए’ - हाथ से पकड़ कर बाहर खींचां!

हम प्रायः अपने आप को मूर्खतापूर्ण ऐसी परेशानियों में डाल देते हैं, जिनसे बाहर निकलने का मार्ग हमारे पास नहीं होता है परमेश्वर ऐसी परिस्थितियों में हमें अपनी इच्छा से इन परेशानियों से बाहर निकालेगा। जब हमें पता चलता है कि यह हमारी गलती है, तो हो सकता है कि हमें परमेश्वर से सहायता मांगने में बहुत ही शर्म महसूस हो। इसका अर्थ है कि हम स्वीकार करते हैं कि इन परेशानियों में हम अपनी ही गलतियों के कारण पड़े हैं। लेकिन ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर नहीं कहता है कि, “बहुत बुरा, यह तुम्हारी परेशानी है, तुम ही इससे बाहर निकलो” परमेश्वर ऐसा नहीं कहता है। परमेश्वर ने लूत से भी ऐसा नहीं कहा। परमेश्वर ने आदम के भटके हुए वंशों से भी ऐसा नहीं कहा कि, “तुम अपने आप इस परेशानी में पड़े हो तो अपने आप ही इससे बाहर निकलो” जब हम असहाय होते हैं तो वह कार्य करता है; वह हमें मृत्यु के मार्ग से निकालकर जीवन के मार्ग पर लाता है।

इसलिए हमें कृतज्ञ होकर आनन्दित होना चाहिए कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए ऐसा है। परमेश्वर अपनी इच्छा से, स्वर्गदूतों के द्वारा, हमें बचाता है - फिर चाहे वह परेशानी हमारी मूर्खता के कारण ही क्यों न आयी हो।

उत्पत्ति के 21 वें अध्याय में एक और बहुत अच्छा उदाहरण हम देखते हैं जहां परमेश्वर के स्वर्गदूत; परमेश्वर के लोगों; की सहायता करने के लिए कार्य करते हैं। परमेश्वर ने पहले ही हाजिरा के जीवन में कार्य किया और हाजिरा उसे “*देखनेहार परमेश्वर*” (उत्पत्ति 16:13) के रूप में जानती थी। अब हाजिरा को पता चला, जैसा कि हम भजन संहिता के 34 वें अध्याय और 6 वें पद में पढ़ते हैं, कि वह केवल देखनेहारा परमेश्वर नहीं है, बल्कि सुनने वाला परमेश्वर भी है। हाजिरा को अब्राहम के घर से दूर कर दिया गया और उसका बेटा मरने वाला है। वह असहाय है- वह अपने बेटे को मरते हुए देखने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी। लेकिन परमेश्वर ने उस पर दया दिखायी और अब्राहम पर दया दिखायी क्योंकि अब्राहम उसका मित्र था। जी

हाँ, अब्राहम परमेश्वर का मित्र था - और यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर के मित्र का पुत्र रो रहा था। इसलिए परमेश्वर ने सुना -

“परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ग से हाजिरा को पुकार के कहा, ‘हे हाजिरा, तुझे क्या हुआ? मत डर; क्योंकि जहाँ तेरा लड़का है वहाँ से उसकी आवाज परमेश्वर को सुन पड़ी है।’” (उत्पत्ति 21:17)

लिखा है कि “जहाँ वह है” और वह असहाय और प्यासी अवस्था में थी। उसकी उस अवस्था से परमेश्वर ने सुना, और स्वर्गदूत ने एक पानी का कुआँ दिया जिससे कि वह और उसका बेटा पानी पी सकें।

भाईयों और बहनों; हम भी पूरी तरह असहाय हैं और मर रहे हैं और परमेश्वर ने हमारे लिए उद्धार के कुएं को खोला है। परमेश्वर ने हमें अपना वचन दिया है और इस वचन के द्वारा; अपने स्वर्गदूतों के द्वारा और अपने बेटे के द्वारा हमें उद्धार का मार्ग दिया है।

याकूब के जीवन के अनुभव में हमें इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण देखने को मिलता है कि किस प्रकार स्वर्गदूत परमेश्वर के लोगों के लिए कार्य करते हैं। जब याकूब, एसाव के पास से अपने सम्बन्धियों के पास भाग गया - उत्पत्ति अध्याय 28, अपनी इस यात्रा में उसने रास्तों में विश्राम किया और उसको एक स्वप्न दिया गया।

“तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा है; और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते ओर उतरते हैं।” (उत्पत्ति 28:12)

एक सीढ़ी जो स्वर्ग तक जाती है! और इसलिए याकूब को पता चला कि स्वर्ग के परमेश्वर तक पहुँचा जा सकता है। आगे स्वर्गदूत “चढ़ते और उतरते” हैं - वे जहाँ याकूब है वहाँ से शुरू करते हैं - यह क्रम बहुत ही महत्वपूर्ण है। वे याकूब के आस पास थे - अपने धोखा देने और झूठ बोलने के कारण भागने के बावजूद भी वे उसके आस पास थे - क्योंकि वह परमेश्वर से डरता था। इसलिए यहोवा के दूत हमेशा उसके आस पास रहते थे, और परमेश्वर की इच्छा को उस तक पहुँचाते थे, जैसा कि हम उसको दिये गये सन्देश में पाते हैं। ऐसा ही प्रभु यीशु मसीह के द्वारा स्वयं अपने विषय में भी कहा गया:



“फिर उस (यीशु) ने कहा, ‘मैं तुम (नतनएल) से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।’” (यूहन्ना 1:51)

चले इस बात के गवाह थे कि किस प्रकार परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के द्वारा अपने

बेटे की सुरक्षा और देखभाल की थी। वे इस बात के गवाह थे कि पिता और पुत्र के बीच हमेशा बातचीत होती थी, और इस बात के भी कि उसके जन्म से लेकर पुनरूत्थान तक और फिर स्वर्गारोहण से वापिसी की घोषणा के लिए स्वर्गदूतों को प्रयोग किया गया। बेटे के साथ पिता के कार्य के लिए लगातार स्वर्गदूतों को प्रयोग किया गया और यहां तक कि उसके द्वितीय आगमन के समय - प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा। क्योंकि पुत्र “डरता” (इब्रानियों 5:7) था इसलिए वह परमेश्वर के दूतों से घिरा रहता था। वर्षों बाद याकूब यह कहने के योग्य हुआ;

“परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादें, अब्राहम और इसहाक चले, वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है; और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वही अब इन लड़कों को आशिष दें।” (उत्पत्ति 48:15-16)

अपने जीवन के अन्तिम समय में याकूब इस बात को समझ गया था कि उसके सम्पूर्ण जीवन में स्वर्गदूत उसकी सुरक्षा और देखभाल के लिए हमेशा उसके साथ थे और उनके बिना वह जीवित नहीं रह सकता था। याकूब के जीवन में स्वर्गदूतों का कार्य एक बहुत ही अच्छा अध्ययन है। जब वह लाबान के पास से वापस आता है, जब वह बेतेल वापिस आने की अपनी, परमेश्वर से की गयी, प्रतिज्ञा को याद करता है, और वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बेतेल आने के लिए चलता है - जैसे ही वह लाबान से अलग होता है - परमेश्वर का स्वर्गदूत उसे मिलता है।

वह समझ जाता है कि वे उसके साथ है और वह अकेला नहीं है। और इसलिए वह यह बात कह सका कि, “दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है” लेकिन इससे याकूब जीवन में घटने वाली कुछ बुरी घटनाओं से नहीं बच पाया। क्या वह ऐसी घटनाओं से बच पाया?

यहाँ याकूब ने एक शब्द का प्रयोग किया कि, “यहोवा ने सारे दिनों में मुझे चराया” यह बहुत ही अच्छा शब्द है जो चरवाहों के लिए प्रयोग होता है - और जहाँ भी कही यह प्रयोग हुआ है वहाँ भेड़ों को चराने के लिए प्रयोग हुआ है। हम जानते हैं कि याकूब एक चरवाहा था और इसलिए वह कहता है कि यहोवा उसका चरवाहा रहा है। चरवाही बाईबिल में दिया गया हमें एक बहुत ही उत्तम संकेत है जो हमारे लिए परमेश्वर के द्वारा किये गये दिव्य प्रबन्ध को दर्शाता है। परमेश्वर चरवाहा है और हम उसकी भेड़े हैं।

‘यहोवा का दूत छावनी किये रहता है (भाग 1)’ (The Angel of the LORD encampeth, Part 1) is from
‘Caution! God at work’, by Tim Galbraith

कृपया निःशुल्क हिन्दी पुस्तिका “यीशु कौन है?” और हिन्दी बाईबल पत्राचार
पाठयक्रम हेतू हमारे निम्न पते पर सम्पर्क करें --

"दीपक" पत्रिका और अन्य पुस्तिकाओं हेतू पता:

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. - 10, मुजफ्फरनगर (यूपी) - 251002

ई-मेल: cdelph_mzn@yahoo.in

पत्राचार पाठयक्रम हेतू पता:

दि क्रिस्टडेलफियन

पो. बा. न. - 50, गाजियाबाद (यूपी) - 201001

ई-मेल: christadelphiansdelhi@gmail.com

Visit us at - www.christadelphians.in

Printed Book

To,

केवल व्यक्तिगत वितरण हेतू